# प्रवासी श्रमिक संदेश

अंक- 12 सीमित वितरण हेतु वर्ष 2015

## *सम्पादक की कलम से ....*

प्रिय पाठकों,

आप सभी को पेपुस परिवार की तरफ से नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। पेपुस परिवार बड़े हर्ष के साथ प्रवासी श्रमिक संदेश का 12वाँ अंक आपके समक्ष लाया है इस अंक में पेपुस के दोनों श्रमिक सहायता केन्द्रों, श्रमिक सहायता केन्द्र, कौड़िहार और श्रमिक सहायता केन्द्र, मूरतगंज द्वारा किये गये प्रयासों और उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है। जैसे वर्ष 2015 समाप्त हो रहा है पेपुस के कार्यक्षेत्र में बहुआयामी विकास की पहल, जागरूकता और कलेक्टिव के माध्यम से सामाजिक रूपान्तरण की सम्भावनायें और बढ़ती नजर आ रही हैं। संस्था की सहभागिता से प्रवासी श्रमिक समुदाय को विकास के विकल्प और सशक्तीकरण का आधार मिल रहा है। विकास को दर्शाने वाले कुछ प्रकरण और किए गये प्रयासों के परिणाम आपके समक्ष प्रस्तुत किये जा रहे हैं। विधिक जागरूकता से श्रमिकों को कार्यसुरक्षा तक पहुँचाने के प्रयास को और मजबूती मिली है। लीगल क्लीनिक डे एवं लीगल लिट्रेसी प्रयासों से इकरारनामा बनवाने को वांछित सफलता मिली है। इससे न केवल शोषण और विवादों में कमी आई है बल्कि नियोक्ता और श्रमिकों के सम्बन्ध सुधरे हैं। लगातार किए जा रहे प्रयासों से श्रमिकों का जागरूकता स्तर एवं आत्म विश्वास बढ़ा है जिससे वे आधारभूत सुविधाओं की माँग करने लगे हैं। आज की प्रवासी श्रमिक समस्याओं के स्वरूप को देखें तो श्रमिक सहायता केन्द्रों की प्रासंगिकता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। अब दूरस्थ जिलों और अन्य राज्यों के श्रमिक भी मतभेद निपटारा और रोजगार के अवसरों के बारे में जानने के लिए श्रमिक सहायता केन्द्रों पर लेबर हेल्प लाइन के माध्यम से सम्पर्क करने लगे हैं। कलेक्टिव के माध्यम से प्रवासी श्रमिक अपनी समस्याओं के समाधान हेतु अग्रसर हुए हैं। प्रवासी श्रमिकों के परिवारों को आर्थिक स्थायित्व देने के लिए किए जा रहे प्रयासों के अन्तर्गत युवाओं को दक्षता संवर्धन हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिसके प्रभावशाली परिणाम सामने आने लगे हैं। इन प्रयासों से आर्थिक विकास को स्थायित्व देने के नये विकल्प उभरे हैं। प्रवासी श्रमिकों एवं उनके परिवारों को श्रम विभाग की योजनाओं का लाभार्थी बनाने हेतु श्रम विभाग में पंजीकरण का प्रयास इस सत्र में प्राथमिकता के स्तर पर किया गया। उल्लेखनीय है कि पेपुस के कार्यक्षेत्र में अधिकांश प्रवासी श्रमिक ईंट भट्ठा एवं अन्य निर्माण श्रमिक हैं। इन श्रमिकों को कार्यसुरक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए इनका पंजीकरण अथवा नवीनीकरण भवन एवं सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड (BOCW) में कराने की प्रक्रिया को सुनिश्चित एवं सुगम बनाने के लिए राज्य स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों ने प्रवासी श्रमिकों की अधिकार प्राप्ति और सशक्तीकरण के लिए चलायी जा रही मुहिम को प्रवासी श्रमिक समुदाय में और भी लोकप्रिय बनाया है। पेपुस द्वारा जेण्डर भूमिका को प्रगतिशील सन्दर्भ देने के कारण महिलाओं के लिए सामाजिक अनुकूलता बढ़ी है और वे अपने अधिकार प्राप्ति की ओर अग्रसर हुइ हैं। पेपुस की सहायता से गठित किये गये स्वजीविका विकास समूह में भागीदारी करने से प्रवासी श्रमिक परिवारकी महिलाएं आर्थिक क्रियान्वयन में सक्रिय हुई हैं, उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और वे औरों को संस्थागत प्रयासों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करने लगी हैं। प्रवासी श्रमिक समुदाय को अपनी सामाजिक स्थिति के लिए खुद जवाबदेह बनने, विकास की तरफ सक्रिय होने और नेतृत्व विकास के लिए समुदाय के युवाओं को श्रमिक मित्रों के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है इस पहल का अहम् बिन्दु है महिला श्रमिक मित्रों को प्रशिक्षित कर समुदाय की अगुवाई करने के लिए सक्षम् बनाना। इस पहल से महिला सशक्तीकरण को एक नया आयाम मिला है।

स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाई गयी है तथा प्रवासी श्रमिक और उनके परिवार को स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ा गया है। बीमारियों में कमी लाना और स्वास्थ्य पर हो रहे व्यय को कम करना स्वास्थ्य कार्यक्रम का दूरगामी उद्देश्य रहा है। पेपुस के प्रयासों से क्षेत्र में विकास की सुदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार हुई है और सामाजिक, आर्थिक विकास की नींव पड़ी है। प्रवासी श्रमिक समुदाय जो नीति निर्धारित करने वालों के लिए अदृश्य था, आज मुख्यधारा से जुड़ता नजर आ रहा है। आशा है कि प्रवासी श्रमिक एवं उनके परिवार नये वर्ष में उन्नति के रास्ते पर नई मंजिलें तय करेंगे परन्तु अभी भी प्रवासी श्रमिक एवं उनके परिवार की स्थिति मे सकारात्मक बदलाव हेतु बहुत सारे प्रयास की आवश्यकता है।

अतः आप सभी के सहयोग एवं सुझाव निश्चित रूप से पेपुस के प्रयासों को और अधिक मजबूती प्रदान करेंगे और हम सब मिलकर प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों की स्थिति को और बेहतर कर पायेंगे।

**कमला**
परियोजना निदेशक

## महिला श्रमिक मित्र की भागीदारी और नेतृत्व एवं पहल

इलाहाबाद जिले के ब्लाक कौड़िहार की ग्राम पंचायत जमुआ उर्फ भवानीपुर में एक छोटा सा मजरा है भवानीपुर जिसमें अनुसूचित जाति के लगभग 25 परिवार हैं इन परिवारों के सदस्य भूमिहीन, ईंट भठ्ठा एवं अन्य निर्माण श्रमिक हैं जिनके पास मजदूरी के अलावा आय का और कोई स्रोत नहीं है। दलित होने के साथ–साथ ये बहुत कम पढ़े लिखे हैं परिवार का निर्वाह करने के लिए इनके पास मजदूरी ही एक मात्र विकल्प है सरकारी तथा गैरसरकारी योजनाओं की जानकारियों का अभाव होने के कारण यह समुदाय असहाय था। इसी गाँव में एक महिला अवधेश कुमारी भी श्रमिक परिवार से हैं इनके परिवार में कुल 7 सदस्य हैं इनके पति पहले ईंट भठ्ठे पर झोंकाई का काम करते थे लेकिन इस समय में भवन निर्माण श्रमिक

के रूप में काम कर रहे हैं। परिवार में आमदनी जो भी होती है इनके पति श्री जगदीश के द्वारा होती है उसी से इनके परिवार का पूरा खर्च चलता है। प्रवासी श्रमिक सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी मिली तब से इनका जुड़ाव पेपुस के कार्यक्रमों में होने लगा। अवधेश कुमारी ज्यादा पढ़ीलिखी नहीं है फिर भी उनका हौसला बुलन्द है और वे प्रयासरत हैं कि श्रमिकों के लिए जो भी योजनायें हैं उसका लाभ उन्हें मिल सके। जब पेपुस द्वारा श्रमिकों को एकजुट करने का काम प्रारम्भ हुआ तब समुदाय को जागरूक करने के लिए ग्राम स्तरीय बैठक की गई, अधिकारों के प्रति संवेदित किया गया और नेतृत्व विकास की नींव रखी गयी। परिणाम स्वरूप श्रीमती अवधेश कुमारी एक प्रतिभाशाली और कर्मठ महिला श्रमिक मित्र के रूप में सामने आई। आज वह श्रमिक सहायता केन्द्र के मार्गदर्शन में श्रमिक समुदाय को विकास योजनाओं से जोड़ने का बीड़ा उठाये हुए हैं। श्रमिक मित्र की भूमिका में अवधेश कुमारी आज श्रमिकों का पंजीयन करा परिचय पत्र दिलवाना श्रम विभाग में पंजीयन एवं नवीनीकरण और सरकारी सुविधाओं से जोड़ने का काम कर रही हैं। अब श्रमिकों को इन सेवाओं के लिए भटकना नहीं पड़ता। अवधेश कुमारी पेपुस द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लेती हैं और श्रमिकों को आयोजित बैठकों और कार्यशालाओं में शरीक करवाती हैं तथा उनका हौसला बढ़ाती हैं और जीवन यापन के विभिन्न विकल्पों की जानकारी देती रहती हैं और समुदाय में महिला सशक्तीकरण की अगुवाकार बनीं हैं। अब समुदाय अपने आप को असहाय नहीं समझता । पेपुस की जागरूक श्रमिक मित्र के रूप में वह समुदाय के लिए प्रेरणास्रोत बनी हैं। श्रमिक समुदाय में श्रीमती अवधेश कुमारी जैसी होनहार स्त्रियों की कमी नहीं है जरूरत है तो बस प्रतिभा और विकास की ललक को पहचानने की। पेपुस, समुदाय में नेतृत्व विकास और महिला सशक्तीकरण के लिए कटिबद्ध है और उसे अब जागरूक समुदाय से अमूल्य सहयोग मिल रहा है।

## इकरारनामा का बढ़ता महत्व

भठ्ठा श्रमिकों के द्वारा अब इकरारनामा के महत्व को समझा जा रहा है, अब श्रमिक व मास्टर फायरमैन कह रहे हैं कि इकरारनामा नही तो काम नहीं। जिला इलाहाबाद, ब्लाक कौड़िहार के ग्राम अखैराजपुर के हरीशरण, टिकरा के रामलखन अपने साथ काम करने वाले श्रमिकों एवं भठ्ठा मालिक के साथ इकरारनामा करवा कर ही भठ्ठे पर काम कर रहे हैं जिसके कारण आज इन लोगों के पास फायरमैन की कमी नहीं रही। क्योंकि फायरमैन भी समझने लगे हैं कि अगर हमारा तय वेतन एवं काम के घंटे की लिखा–पढ़ी रहेगी तो मालिक या ठेकेदार के द्वारा बेईमानी नहीं हो पायेगी। वर्ष 2015 में हरीशरण ने 10 भठ्ठे पटना (बिहार) में लिये हैं, इन्होंने अपने सारे श्रमिकों के साथ–साथ खुद का भी इकरारनामा करवा लिया है। ठीक इसी तरह श्रमिक भी इकरारनामा करवाने पर जोर देने लगे हैं। रामलखन यादव टिकरा निवासी जो अनपढ़ हैं तथा काम के लिए नेपाल जाते हैं इन्होंने कई बार अपने मालिक एवं झोकवा से धोखा खाया है और अब ये

भी अपने मालिक एवं श्रमिकों के साथ इकरारनामा करवा कर ही भठ्ठे पर काम करने जा रहे हैं। ग्राम पुरई का पुरवा के सुरेश कुमार जो भठ्ठे पर

झोकाई का काम करते हैं इन्होंने अपने मास्टर फायरमैन से साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक आप हमारे साथ इकरारनामा नहीं करोगे हम आप के साथ काम पर नहीं जायेंगे। इसी गाँव के रामसेवक, सुरेश, मोहन, प्रेमचन्द्र, किशोरी लाल सभी ने इकरारनामा करवाया है। श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज, कौशाम्बी ने भी प्राथमिकता के स्तर पर इकरारनामे बनवाने का प्रयास जारी रखा। फलस्वरूप ग्राम पट्टीनरवर निवासी अमरसिंह, भिखियापुर निवासी भोला, चन्दीपुर परसरा निवासी रामदेव, पाण्डेयमउ निवासी रामसिंह, चकमाहपुर निवासी जवाहिर, काजीपुर निवासी मूलचन्द्र और जलालपुर बोरियो निवासी अशोक के इकरारनामा सफलतापूर्वक किए गये। इकरारनामा के बढ़ते महत्व को देखते हुए ग्राम सपटुआ, ब्लाक कौड़िहार के पन्नालाल ने भी अपने श्रमिकों के साथ इकरारनामा करवाया है तथा भठ्ठा मालिक से भी लिखा–पढ़ी करवा ली है। क्योंकि उन्हें पता हो गया है कि इससे मजदूरी लेन–देन में कोई विवाद नहीं होगा और आपसी व्यवहार भी बना रहेगा जिससे हमारे काम में और भी सुरक्षा आयेगी। पिछले सीजन में ग्राम पुरई का पुरवा, सपटुआ, अखैराजपुर, कमालापुर, चकरघुवीर पाठक एवं जनपद फतेहपुर के श्रमिक, श्रमिक सहायता केन्द्र, लालगोपालगंज से इकरारनामा करवा कर भठ्ठे पर काम करने गये थे, पूरे सीजन इन लोगों ने काम किया और जो भी मजदूरी तय करके गये थे वह पूरी की पूरी मजदूरी उन्हें मिल गई। इन सकारात्मक अनुभवों के कारण प्रवासी श्रमिक समुदाय में इकरारनामा का महत्व बढ़ने लगा है।

## लीगल क्लीनिक डे का प्रयास, श्रमिकों मे जगी आस

ग्राम उमरावगंज, लालगोपालगंज, ब्लाक कौड़िहार, जिला इलाहाबाद के रहने वाले राजकुमार पुत्र सुरेश कुमार भठ्ठे पर ईंट पकाने का काम करके अपने परिवार का पालन पोशण करते हैं। वर्ष 2014 के सीजन में भठ्ठे पर काम करने के लिए राजकुमार अपने गाँव के मास्टर फायरमैन प्यारे लाल के साथ पटना (बिहार) गये थे इन्होंने 6 माह काम किया, भठ्ठे का काम बन्द होने के पहले ही मास्टर फायरमैन अपने घर चला आया, क्योंकि उसके घर पर कुछ कार्यक्रम था और फायरमैन राजकुमार भठ्ठे पर काम करता रहा। जब भठ्ठा बंद हुआ तो राजकुमार ने भठ्ठा मालिक से अपने काम का हिसाब करवाया तो राजकुमार की मजदूरी 22000रू0 निकली। राजकुमार ने मालिक से कहा कि मेरी मजदूरी आप हमें दे दो पर मालिक ने कहा कि तुम्हारा मास्टर फायरमैन प्यारे लाल हमसे पहले ही 2 लाख रू0 ले जा चुका है तुम जाओ उसी से अपनी बकाया मजदूरी ले लो। राजकुमार को भठ्ठा मालिक ने सिर्फ 500 रू0 किराया देकर घर भेज दिया। राजकुमार ने जब घर आकर ठेकेदार से अपनी बकाया मजदूरी 22000रू0 माँगी तो ठेकेदार ने कहा कि एक माह तक रूक जाओ मैं भठ्ठे पर (पटना) जाकर मालिक से एडवांस लेकर आऊँगा तो तुम्हारा पैसा दे दूँगा। एक माह गुजर जाने के बाद राजकुमार जब प्यारे लाल से मिला तो उसने एक माह का समय फिर से लिया। इसी तरह से 1 वर्ष गुजर गया। वह जब भी पैसा मांगने के लिए

प्यारेलाल के पास जाता तो वह कोई न कोई बहाना बनाकर हर बार टाल देता। जुलाई 2015 में राजकुमार प्यारे लाल के घर पैसा मांगने गया तो

उसके घर वाले राजकुमार से झगड़ा करने लगे एवं कहने लगे कि तुम्हें जो करना है कर लो हम पैसा नहीं देंगे। अन्त में राजकुमार परेशान होकर श्रमिक सहायता केन्द्र, लालगोपालगंज आये और उनकी काउंसलिंग की गई तथा राजकुमार को लीगल क्लीनिक डे के दिन बुलाया गया और उनका केस दर्ज किया गया तथा द्वितीय पक्ष, प्यारे लाल, के नाम से सूचना पत्र जारी किया गया। अगले माह के लीगल क्लीनिक डे के दिन द्वितीय पक्ष को बुलाया गया तथा फोन पर भी ठेकेदार से सम्पर्क किया गया लेकिन सम्पर्क नहीं हो पाया। सूचना पत्र के अनुसार अगले माह लीगल क्लीनिक डे के दिन प्यारे लाल श्रमिक सहायता केन्द्र नहीं आया तब हाईकोर्ट एडवोकेट श्री जगदीश सिंह ने उसके नम्बर पर फोन लगाया, फोन उसके बेटे ने उठाया जगदीश सिंह जी ने प्यारे लाल के बारे में जानकारी मांगी तो उसने कहा कि वे लखनऊ में हैं। वकील साहब ने प्यारे लाल के बेटे को समझाया कि अगर तुम्हारे पिता जी एक सप्ताह के अन्दर श्रमिक सहायता केन्द्र लालगोपालगंज पर सम्पर्क नहीं करते हैं तो केस लेबर कोर्ट में दायर करा दिया जायेगा, तब तुम लोगों को बात समझ में आयेगी। दिनाँक 13/08/2015 को प्यारे लाल श्रमिक सहायता केन्द्र पहुँचा तो प्यारे लाल को समझाया गया कि तुम अगर श्रमिक राजकुमार का पैसा नहीं देते हो तो तुम्हें मुकदमा का सामना करना होगा, इसके बाद प्यारे लाल ने कहा कि साहब ठीक है आप जैसा कहेंगे वैसा करने को हम तैयार हैं तब प्रथम पक्ष राजकुमार को फोन करके बुलाया गया और दोनों पक्षों से बातचीत करके समझौता किया गया एवं प्यारे लाल 22000रू0 देने के लिए तैयार हुए। दोनों पक्ष की लिखा–पढ़ी कराई गयी तथा अगले दिन प्यारे लाल द्वारा श्रमिक राजकुमार को पैसा दे दिया गया। इस प्रकार लीगल क्लीनिक डे के माध्यम से प्रवासी श्रमिक राजकुमार को उनकी बकाया मजदूरी मिल गई और वे बहुत खुश हुए और उन्होंने पेपुस के प्रयासों के प्रति आभार प्रकट किया।

## प्रशिक्षण से हुआ जीवन स्तर में बदलाव

सुदामा देवी, पत्नी तीरथ नाथ ग्राम– रानीगंज, पोस्ट– मेण्डारा, जिला– इलाहाबाद की रहने वाली हैं। सुदामा देवी के पति तीरथ नाथ सहारनपुर में ईंट भठ्ठे पर झोकाई का कार्य करते हैं। सुदामा देवी ने इण्टर की पढ़ाई किसी तरह पूरी कर ली लेकिन घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर सकी। फिर भी सुदामा ने हार नहीं मानी और अपने लक्ष्य के लिए हमेशा ही प्रयास करती रही। वह सोंचती रहती थी कि आगे कुछ काम किया जाय जिससे घर की आर्थिक स्थिति में सुधार आये। एक दिन रानीगंज गाँव में पेपुस द्वारा ग्राम स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में सुदामा भी उपस्थित थी। बैठक के दौरान जब प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी गई तो सुदामा ने सिलाई, कढ़ाई सीखने की इच्छा व्यक्त की और

कहा कि अगर हम यह काम सीख लेंगे तो हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति में कुछ बदलाव आयेगा। तब प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सुदामा की काउंसलिंग की गई और पेपुस द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोड़ा गया। सुदामा ने छः माह तक सिलाई, कढ़ाई का प्रशिक्षण लिया और प्रशिक्षण के दौरान वह हमेशा पूरे विश्वास के साथ काम सीखती रही। छः माह प्रशिक्षण पूरा करने के बाद कुछ दिन तक वह घर में एक मशीन रखकर सिलाई का काम करती थी जिससे उनकी कुछ आमदनी हो जाती थी, उसी पैसे से सुदामा ने बी0ए0 की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद आस–पास की कुछ लड़कियों ने भी

सिलाई, कढ़ाई सीखने की इच्छा जताई, इससे सुदामा के उत्साह में और बढ़ोत्तरी हुई, उसने अपने परिवार में इस सम्बन्ध में बातचीत की परिवार के लोगों ने भी इस काम में सुदामा का सहयोग किया और उसने ''सुधा सिलाई केन्द्र'' के नाम से अपने घर पर ही केन्द्र खोला। सुदामा अब उस केन्द्र का संचालन कर रही हैं। वह अब तक 50 किशोरियों को सिलाई–कढ़ाई का प्रशिक्षण दे चुकी हैं और 25 किशोरियाँ वर्तमान में नामांकित हैं। प्रत्येक किशोरियों से 10 रूपये नामांकन शुल्क एवं 100 रू0 प्रतिमाह प्रशिक्षण शुल्क लेकर प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही हैं साथ ही साथ प्रशिक्षण समय के बाद कुछ आस–पास का कपड़ा सिलने का भी काम कर लेती हैं। इस प्रकार महीने में सुदामा की आमदनी लगभग 5000 से 6000रू0 तक हो जाती है। सुदामा द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण की समय अवधि 6 माह है और इनका कहना है कि इतने समय में इस ट्रेड की पर्याप्त जानकारी मिल जाती है। सुदामा का कहना है कि जिस तरह से मुझे पेपुस का सहयोग मिला इसी प्रकार हमारा यही प्रयास है कि जो भी किशोरयाँ हमारे यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं सभी हमारे जैसे बन कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकें। इस प्रकार सुदामा आज बहुत खुश हैं और पेपुस को धन्यवाद देती हैं तथा कहती हैं कि यदि पेपुस का सहयोग न मिला होता तो मैं इस मुकाम तक न पहुँच पाती।

## श्रमिक सहायता केन्द्र ने दी दिशा, मिला निर्माण श्रमिक योजना का लाभ

पेपुस द्वारा संचालित प्रवासी श्रमिक सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत मूरतगंज कौशाम्बी में प्रवासी श्रमिकों की जागरूकता हेतु कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जिसमें ग्राम स्तरीय बैठकों के माध्यम से प्रवासी श्रमिकों एवं उनके परिवार की सामाजिक सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है जिसके माध्यम से प्रवासी श्रमिक जागरूक हो रहे हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठा पा रहे हैं। पिछले वर्ष की बात है ग्राम पंचायत मौली, मूरतगंज, कौशाम्बी में प्रवासी श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा हेतु निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड में पंजीकरण कराने के लिए श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज के सहयोग से श्रम विभाग के द्वारा 25 श्रमिकों का पंजीकरण दिनाँक 27–10–2014 को करवाया गया था जिसमें मोहम्मद शमीम का भी पंजीकरण हुआ था। शमीम मौसमी प्रवासी श्रमिक थे इसके अलावा प्रवास से वापस आने पर मनरेगा में भी मजदूरी करते थे जिससे उनके परिवार का खर्च चलता था, मो0 शमीम अचानक बीमार पड़े उनको इलाज के लिए स्वरूपरानी अस्पताल इलहाबाद में भर्ती कराया गया लेकिन भाग्य ने ऐसा कहर ढाया कि इस परिवार का सहारा ही छीन लिया मो0 शमीम की इलाज के दौरान दिनाँक 22–4–2015 को मृत्यु हो गई, जिससे पूरा परिवार भुखमरी के कगार पर आ गया क्योंकि पूरे परिवार का खर्च इन्ही के कमाई पर चलता था पत्नी फात्मा और

इनके छः बच्चों का रो–रो कर बुरा हाल था। मृत्यु के कुछ दिन बाद स्व0 शमीम के भाई हनीफ एवं उनका लड़का BOCW का श्रमिक परिचय पत्र लेकर श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज कौशाम्बी आये और समन्वयक शिवमंगल जी को घटना की पूरी जानकारी दी तब उन्हें बताया गया कि आप अपने भाई के मृत्यु का प्रमाण पत्र अस्पताल से और परिवार रजिस्टर की नकल तथा ग्राम प्रधान से मृत्यु प्रमाण पत्र लिखवाकर पहचान पत्र के साथ श्रम विभाग मंझनपुर जाकर धर्मेन्द्र जी से सम्पर्क करें साथ ही साथ शिवमंगल जी ने फोन से श्रम विभाग में सम्पर्क भी किया। इसके बाद हनीफ अपने भाई के लड़के के साथ सारे कागजात लेकर

श्रम विभाग में धर्मेन्द्र जी से मिले तब उन्होंने सभी कागजों को देखा और कहा कि स्व0 शमीम की पत्नी फातमा की बैंक पासबुक की छायाप्रति शपथ पत्र के साथ जमा कर दें तब पंजीकृत श्रमिक की पत्नी को मृत्यु एवं अन्त्येष्ठि सहायता योजना के तहद एक लाख पन्द्रह हजार रूपया मिलेगा उन्होंने ऐसा ही किया। कुछ दिनों के बाद सितम्बर माह में पेपुस कार्यकर्ता रामनरेश जी मौली गये और शमीम के परिवार से सम्पर्क किया तो पता चला कि फातमा के खाते में एक लाख पन्द्रह हजार रूपये आ गये हैं जिससे आज यह परिवार जो बेसहारा था इस सहायता से परिवार की गाड़ी पुनः चल पड़ी बच्चे स्कूल जाने लगे हैं और उनका बड़ा लड़का हेयर कटिंग का काम सीख रहा है। आज फातमा यह कहती हैं श्रमिक सहायता केन्द्र के सहयोग से मेरा परिवार फिर से चल पड़ा है और पूरा परिवार खुश है।

## जैविक विधि से तैयार किया गृह वाटिका

प्रवासी श्रमिक सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज कौशाम्बी के द्वारा गाँव–गाँव में स्वास्थ्य जागरूकता बैठक, ग्राम स्तरीय बैठकें आयोजित कर प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवार को प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल के साथ–साथ जैविक विधि से गृह वाटिका के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है।

यह बात है ग्राम चन्दीपुर परसरा, मूरतगंज, कौशाम्बी के श्रमिक सुखलाल की। **इनका** परिवार चार लोगों का है जिनके घर में हमेशा आर्थिक तंगी एवं बीमारी के कारण अक्सर लड़ाई–झगड़े होते रहते थे। इनके अलावा पूरे गाँव में गन्दगी का आलम था। जिससे ज्यादातर परिवार बीमारियों से ग्रसित रहता था एक दिन पेपुस कार्यकर्ता रामनरेश जी इनके गाँव में स्वास्थ जागरूकता बैठक हेतु गये और सुखलाल जी से बात किया जिस पर उन्होंने पहले तो विरोध किया लेकिन पूरी बात समझने के बाद वह खुद ही अपने गाँव के लोगों को एक जगह इकट्ठा किये। जिसमें श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता पर बैठक किया गया जिसमें गाँव के उपस्थित सभी महिला एवं पुरूषों को साफ–सफाई, टीकाकरण, जननी सुरक्षा योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना आदि की जानकारी दी गई इसके अलावा रसायन खाद व कीटनाशक युक्त साग–सब्जियों के प्रयोग से होने वाली बीमारी से भी अवगत कराया गया। जिससे यह बात सामने आई कि हमारे गाँव में ज्यादा से ज्यादा लोग बाजार की सब्जियों का

इस्तेमाल करते हैं जिसकी वजह से तो नहीं बीमार पड़ते हैं ? जिसके कारण हम लोगों की कमाई का बहुत सारा पैसा इलाज कराने में खर्च हो जाता है। तभी उन्हें बताया गया कि अपने घर के आसपास खाली जगहों पर खुद अपने खाने के लिए साग–सब्जी जैविक खाद के उपयोग से उगा सकते हैं जिससे दो तरह से फायदे होंगे एकतो बीमारी कम लगेगी और इलाज के पीछे खर्च होने वाला पैसा भी बचेगा, यह बात लोगों को अच्छी लगी जिसकें लिए सुखलाल जी सबसे पहले तैयार हुए आज सुखलाल जी अपनी गृह वाटिका तैयार कर लिए हैं जिसमें अपने खाने के लिए बैगन, टमाटर, लहसुन, धनिया, गाजर, मूली, पालक आदि। अपने गृह वाटिका में गोबर की खाद, नीम की पत्ती, आदि का उपयोग करते हैं जिसकी वजह से इनके परिवार में लोग कम बीमार पड़ते हैं, जिसको देखकर गाँव के अन्य लोग भी गृह वाटिका को अपनाना शुरू कर दिये हैं आज सुखलाल जी बहुत खुश हैं साथ ही साथ सुखलाल जी गाँव में अन्य लोगों को भी गृह वाटिका के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

## स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का दिखने लगा असर

पेपुस द्वारा संचालित प्रवासी श्रमिक सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज, कौशाम्बी के माध्यम से प्रवासी श्रमिकों एवं उनके परिवारों की स्वास्थ्य जागरूकता के लिए गाँव–गाँव में स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों का आयोजन करके विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव की जानकारी दी जा रही है जिसके माध्यम से प्रवासी श्रमिक और उनके परिवार लाभान्वित हो रहे है। ग्राम पंचायत काजीपुर मूरतगंज, कौशाम्बी के रहने वाले प्रवासी श्रमिक श्री छोटेलाल पुत्र रामकिशोर जिनकी उम्र 45 वर्ष है पिछले 20 वर्षों से विभिन्न स्थानों पर ईंट भट्ठे पर जलाई का काम करते थे। जिसकी कमाई से इनके परिवार का खर्च चलता था इनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं, ईंट भट्ठे पर जलाई का काम करते–करते छोटेलाल का स्वास्थ्य धीरे–धीरे खराब होने लगा जिसके इलाज के लिए यहाँ वहाँ झोलाछाप डॉक्टरों से दवा ले लेते थे जिससे थोड़ा बहुत आराम मिल जाता था, धीरे–धीरे समय बीत रहा था कि पिछले वर्ष इनकी तबियत ज्यादा खराब होने से लगातार खाँसी और बलगम आने लगा जिसकी वजह

से छोटेलाल काफी कमजोर हो गये और काम करना बन्द हो गया तब इनकी पत्नी को भवन निर्माण कार्य में गाँव के आस–पास काम करके गुजारा करना पड़ रहा था फिर भी परिवार की स्थिति बिगड़ती गई और 1 बीघा खेत जो इनके पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई थी उसको भी बेचना पड़ा, इनका रहने वाला मकान भी पुराना होने के कारण जर्जर हाल में था एक दिन की बात है इनके गाँव में श्रमिक सहायता केन्द्र मूरतगंज, कौशाम्बी के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित किया गया जिसमें छोटेलाल भी शामिल हुए डॉक्टर के द्वारा स्वास्थ्य चेकअप के दौरान इनकी स्थिति को देखते हुए डॉक्टर को टी0बी0 होने की आशंका हुई तभी डॉक्टर ने सलाह दिया कि आप सबसे पहले डॉट्स सेन्टर पर बलगम जाँच करायें, संयोग की बात यह रही कि डॉट्स कार्यकर्त्ता श्री बच्चालाल जी भी उस कार्यक्रम में मौजूद रहे, जो कि श्रमिक सहायता केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में रूचि भी रखते हैं, उन्होंने अगले दिन छोटेलाल जी को डॉट्स सेंटर ले गये और जाँच करवाया रिपोर्ट आने के बाद पता चला कि वह टी0बी0 रोग से संक्रमित हैं। उनका इलाज चलना शुरू हुआ धीरे–धीरे दवा के असर से छोटेलाल जी ठीक हो गये अब वह आसपास के अन्य ब्लाकों के भट्ठों पर फिर से ईंट निकासी का काम करने लगे है जिससे धीरे धीरे उनके परिवार की स्थिति बदली है, उन्होंने अपना मकान भी बनवा लिया है और उनके बच्चे भी स्कूल जाने लगे हैं, इस प्रकार छोटेलाल जी श्रमिक सहायता केन्द्र को बहुत–बहुत धन्यवाद देते हैं और कहते हैं कि अगर हमें इस तरह सही जानकारी न मिली होती तो आज हम जिन्दा न होते, छोटेलाल जी अपने अलावा सात अन्य श्रमिकों को जो कि टी0बी0 रोग से ग्रसित हैं उनको भी डॉट्स कार्यकर्ता से मिलाकर उनका भी इलाज करवाने में मदद कर रहे हैं जिसके कारण अन्य श्रमिकों को भी इसका लाभ मिल रहा है।

# प्रवासी श्रमिक सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ 31 दिसम्बर 2015 तक...

- 33293 प्रवासी श्रमिकों का पंजीकरण एवं परिचय पत्र जारी किए गये ।
- 3243 युवाओं (युवक, युवतियों) को रोजगार परामर्श शिविर, आदि के माध्यम से रोजगार परामर्श किया गया ।
- आजीविका बेहतर बनाने हेतु 1246 युवाओं को विभिन्न ट्रेड में प्रशिक्षण दिया गया ।
- 876 युवा स्वरोजगार एवं रोजगार से जुड़े ।
- प्रवासी श्रमिकों के पारिश्रमिक को लीगल क्लीनिक डे के माध्यम से रू0 31,22,116/- श्रमिकों को दिलवाया गया ।
- श्रमिकों की काउंसलिंग और जागरूकता शिविरों के माध्यम से 2189 श्रमिकों के विभिन्न बैंकों में खाता खुलवाये गये ।
- 28 स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों के माध्यम से 3953 श्रमिकों को लाभ मिला ।
- 2696 श्रमिकों और उनके परिवार के सदस्यों को विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाया गया ।
- 1430 श्रमिकों का निर्माण श्रमिक योजना के अन्तर्गत श्रम विभाग में पंजीकरण एवं 198 श्रमिकों का नवीनीकरण करवाया गया।
- 1720 इकरारनामा, श्रमिकों और ठेकेदार/भट्ठा मालिक के बीच बनवाये गये ।
- 5 श्रमिक सम्मेलन का आयोजन कर 2400 श्रमिकों को प्रवासी श्रमिकों के मुद्दों पर संवेदित किया गया।
- 27 स्वजीविका विकास समूह का गठन किया गया, जिसमें कुल सदस्य 358 और कुल पूँजी रू0 99500/– है।

## फोन करें - लेबर हेल्प लाइन 09450265964

**संपर्क करें -**

**श्रमिक सहायता केन्द्र, लालगोपालगंज**
इलाहाबाद-लखनऊ हाइवे,
कौड़िहार, इलाहाबाद
मो0-9453056951

**श्रमिक सहायता केन्द्र, मूरतगंज**
स्टेट बैंक के बगल में
मूरतगंज- कौशाम्बी
मो0-8765839074

सम्पादक मण्डल :- हरीराम, कमला, पुनीत, हीरामणि, शिवमंगल, राजकुमार, अवधेश

**पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी उत्थान समिति (पेपुस)**
पर्यावरण नगर, हवेलिया, झूसी, इलाहाबाद- 211019
**Mob. 9415308805**
email : pepus.rahul1990@gmail.com, pepus1@rediffmail.com,
www.pepus.ngo, www.facebook.com/pepus.1990

सहयोग- An Initiative of Tata Trusts, मुम्बई